

वसन्त पंचमी १९१० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पृथ्वी गुरुदेव युगकवि वेदवृत्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

महाकाल का प्रतिभाओं को आमंत्रण: प्रचण्ड मनोबल और लक्ष्य-प्राप्ति का विज्ञान

आत्म-परिष्कार और जैव-विद्युत (Bio-electricity) के
जागरण की वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक रूपरेखा।

A

संकल्प (Willpower):

अव्यक्त ऊर्जा। मनुष्य की वह मूल शक्ति जो विचारों और आकांक्षाओं को जन्म देती है।

B

जैव-विद्युत / प्राणाग्नि (Bio-electricity):

वह वैज्ञानिक और भौतिक शक्ति जो शरीर और मस्तिष्क की हर कोशिका को सञ्चालित करती है।

C

प्रतिभा (Refined Genius): जब अदम्य साहस, उच्च आदर्शवाद और मनोबल एक साथ मिलते हैं, तो यह ऊर्जा 'परिष्कृत प्रतिभा' का रूप ले लेती है।

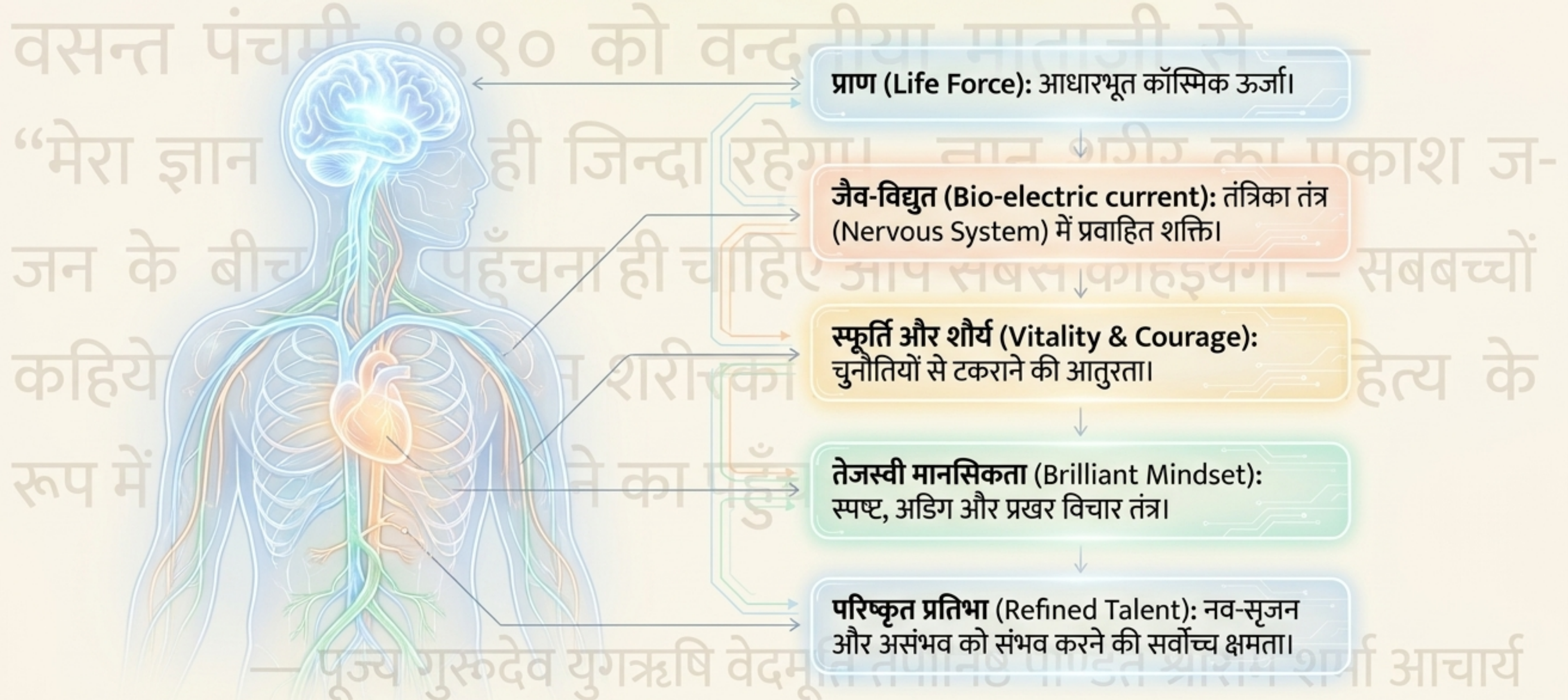
“मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु और स्वयं ही अपना मित्र है। इसलिए अपने को उठाओ, गिराओ मत।”

(गीता)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रतिभा का शरीर-विज्ञान (The Anatomy of Talent)

विज्ञान की दृष्टि में: जिस प्रकार यंत्र बिजली से चलते हैं, मनुष्य का शरीर और उपलब्धियां 'जैव-विद्युत' (Bio-electricity) से संचालित होती हैं। इसी प्राणाग्नि का प्रखर रूप 'प्रतिभा' है।



इतिहास साक्षी है - समर्थ की प्रतिभा का हस्तान्तरण (The Catalyst Effect)

सामान्य अवस्था (Ordinary State)	प्रेरक/मार्गदर्शक (Catalyst)	ऐतिहासिक परिणति (Historical Output)
भयभीत वानर/रीछ	→ श्रीराम का प्रखर संकल्प	→ समुद्र पर सेतु निर्माण और लंका विजय।
असमंजस में घिरा चन्द्रगुप्त	→ आचार्य चाणक्य की प्राण-चेतना	→ अखण्ड भारत का चक्रवर्ती सम्राट।
पिंजरे में बंद साधारण महिलाएँ	→ रानी लक्ष्मीबाई का ओज	→ अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाली वीर सेना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार वे

1. आत्मनिरीक्षण
(Self-Observation):
अपने भीतर छिपे हुए दोषों, दुर्गुणों और
कुसंस्कारों की बारीकी से खोज करना।
(रोज घर में बुहारी लगाने के समान)।

2. आत्मसमीक्षा
(Self-Analysis): खोजी गई
मलीनता और कमजोरियों का
तटस्थ भाव से सटीक आकलन
करना।

3. आत्मसुधार (Self-Correction):
अपनी संकल्प शक्ति से बुराइयों से जुड़ना
और उनका कठोरता से निराकरण करना।

4. आत्मविकास
(Self-Development):
अपनी विशिष्टताओं को सींचना
और सुसंस्कारी आदर्शवादिता
का अभ्यास करना।

व्यक्तित्व का परिष्कार
(Refinement of Personality)

प्रतिभा यकायक नहीं बनती; इसे खराद (Lathe machine)
पर चढ़ाकर अनवरत तराशना पड़ता है।

वसन्त पंचमी १९१० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए...
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव

आंतरिक ऊर्जा के भौतिक नियम (The Physics of Inner Drive)

वरान्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए... मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव

उत्प्लावन बल (The Law of Buoyancy)



उत्प्लावन बल (The Law of Buoyancy): लकड़ी का लट्ठा तभी तक डूबता है जब उस पर भारी पत्थर (कुसंस्कार/दुर्गुण) बंधा हो। वजन हटते ही वह लहरों और भँवरों को चीरता हुआ दनदनाता हुआ आगे बढ़ता है।

चुम्बकीय आकर्षण (The Law of Magnetism)



चुम्बकीय आकर्षण (The Law of Magnetism): मनुष्य की संकल्प शक्ति चुंबक की तरह है। प्रतिभा के धनी व्यक्ति ब्रह्मांड से आवश्यक साधन, श्रेष्ठ सहयोगियों का स्नेह और सफलताएँ अपनी ओर खींच लेते हैं।

प्रसुप्त बनाम जाग्रत: अपनी स्थिति पहचानें (Diagnostic Matrix)

प्रसुप्त (Dormant)

परावलम्बी, भाग्य और
परिस्थितियों पर निर्भर
(Dependent on luck).



कठिनाइयों में घुटन अनुभव
करना और आँसू बहाना
(Suffocating & Crying).



भीतर से खोखला पानी
का बबूला
(Empty bubble).



जाग्रत (Awakened)

स्वयं अपना भाग्य विधाता
(Creator of own destiny).



अड़चनों को पैरों तले रौंदने
का अदम्य साहस
(Courage to crush obstacles).



राख के नीचे दबा
जाज्वल्यमान अंगारा
(Burning coal beneath ashes).



चिकित्सा विज्ञान और मनोबल के प्रत्यक्ष प्रमाण (Physical Proofs of Willpower)

Case Study 1: शारीरिक कायाकल्प

बचपन में भयंकर
बीमारियों से ग्रसित
क्षीणकाय



प्रखर मनोबल और
अनवरत अभ्यास

यूरोप का विश्वविजयी
पहलवान सैंडो

(समान उदाहरण: हिन्द केसरी चन्दगीराम)।



Case Study 2: चिकित्सा विज्ञान की हार

इंग्लैंड की कैंसर
रोगिणी
(डॉक्टरों द्वारा मात्र
6 महीने का समय)

मृत्यु का भय छोड़
परोपकार का दृढ़ संकल्प
(टीवी पर अपील)

3 करोड़ का फण्ड
जुटाकर अस्पताल
का निर्माण

कैंसर का शरीर
से पूर्ण विनाश।



अंतश्चेतना (प्रतिभा) इतनी सबल है कि वह मृत्यु को भी धकेल सकती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए... क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव

वातावरण का प्रभाव (Effect of Environment)

दुर्गन्ध/कुसंग

(Bad company - Leads to decay)

सुगन्ध/सत्संग

(Good company - Leads to peace)

स्वाध्याय और सत्संग

(Self-Study & Noble Association):

पुस्तकों और इतिहास के स्वर्णाक्षरों में
लिखे मनीषियों के संस्मरण पढ़ना
'देवलोक के नंदनवन' में विचरने के समान है।

यह सबसे सशक्त वैचारिक फिल्टर है।

(Reading memoirs of wise men written in
books and golden letters of history is like
wandering in the 'Nandanvan of Devaloka'.
This is the most powerful ideological filter.)



वसंत पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए...
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव

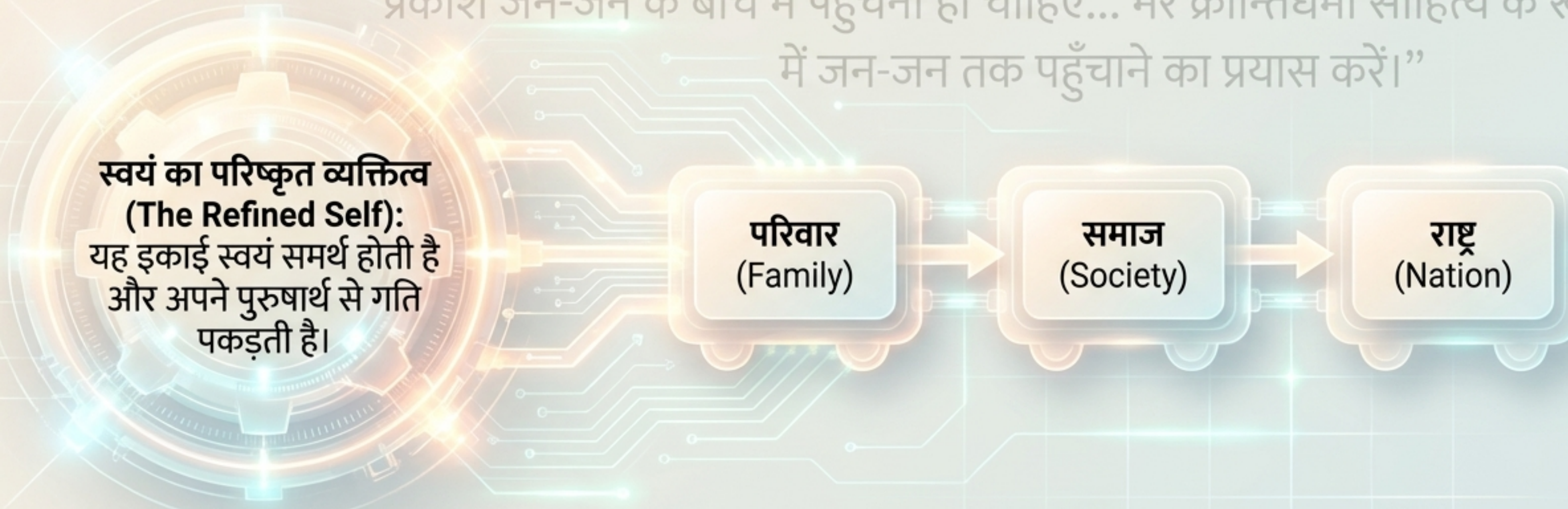
परिणाम (Output)

चारित्रिक ऊँचाई, सत्साहस और अजेय आत्मविश्वास

(Character height & Invincible self-belief)

नेतृत्व का 'इंजन' सिद्धांत (The Architecture of Leadership)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए... मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”



**स्वयं का परिष्कृत व्यक्तित्व
(The Refined Self):**
यह इकाई स्वयं समर्थ होती है
और अपने पुरुषार्थ से गति
पकड़ती है।

**परिवार
(Family)**

**समाज
(Society)**

**राष्ट्र
(Nation)**

रेल का इंजन जब स्वयं प्रचंड शक्ति अर्जित करता है, तभी वह पीछे जुड़े डिब्बों को गति दे पाता है। दूसरों को उठाने के लिए पहले 'अपनी पात्रता' विकसित करनी पड़ती है। मात्र **'पर उपदेश कुशल बहुतेरे'** (केवल उपदेश देने) से समाज नहीं बदलता।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए...
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव

असम्भव को सम्भव बनाना (Breaking Impossible Barriers)



जब प्रबल इच्छा शक्ति जगती है,
तो दैवी शक्तियाँ और प्रकृति स्वयं
मार्ग प्रशस्त करने लगती हैं।

नेपोलियन की हुंकार: ‘असम्भव शब्द मूर्खों के कोश में है। यदि
आल्प्स पर्वत ने राह न दी, तो उसे पैरों तले रौंद दिया जाएगा।’

फरहाद का पुरुषार्थ: केवल एक फावड़े के सहारे
पहाड़ काटकर 32 मील लम्बी नहर निकाल देना।

टिटहरी का संकल्प: चोंच में बालू भरकर समुद्र पाटने का अदम्य दुस्साहस,
जिससे विवश होकर अगस्त्य मुनि ने समुद्र पी लिया।

कोलम्बस का साहस: बिना किसी पूर्व प्रमाण के अज्ञात और अनंत समुद्र में उतरना।

ईश्वरीय बैंक में निवेश (The Investment of Divinity)

मनुष्य का निवेश (Human Investment)

परमार्थ की भावना, नव-सृजन
का दृढ़ संकल्प, उत्कृष्ट चरित्र
और लोकमंगल।

“

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना
ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

”

ईश्वर का अनुदान (Divine Grant)

हनुमान जी को असीमित बल,
कुन्ती को देवपुत्र, शिवाजी को
भवानी की अक्षय तलवार।

ईश्वरीय बैंक में जमा की गई पूँजी सर्वाधिक ब्याज के साथ लौटती है।
स्रष्टा उसी को ‘परिष्कृत प्रतिभा’ देता है, जो इसका उपयोग नव-सृजन के लिए करे।

महामानव की संरचना (The Synthesis of a Mahamanav)



नव-सृजन का आमंत्रण (Call to the Era of Neo-Creation)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर के बीच में पहुँचना ही चाहिए... मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के पहुँचाने का प्रयास करें।”

पारस से सटने का समय:
सृजन-शिल्पियों को महान बनाने
के लिए ईश्वरीय सत्ता (महाकाल)
तत्पर है। यह कल्पवृक्ष की छाया
में बैठने का दुर्लभ सुयोग है।

आज के समय की माँग:
बढ़ता प्रदूषण, अनाचार, और
प्रलय की सम्भावनाओं को रोकने
के लिए सशक्त अवरोध और
असाधारण प्रतिभाओं की
आवश्यकता है।

आपका कदम:
यह प्रभात पर्व है। अपनी
प्रसुप्त क्षमताओं को जगाएं,
आत्म-परिष्कार करें और
नव-सृजन के भागीदार बनें।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)